International Journal of Applied Research 2022; 8(6): 382-386

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 382-386
www.allresearchjournal.com
Received: 02-03-2022
Accepted: 10-04-2022

शोभा कुमारी
शोध छात्रा, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
शोभा कुमारी
शोध छात्रा, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

हृदय विकृति पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन

शोभा कुमारी

सारांश
किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं विकास का मूलभूत आधार मानसिक स्वास्थ्य एवं शारारिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। आज के वर्त्तमान समय में हृदय विकृति हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में आ खड़ी हो गई है। जिससें केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व इस विकृति से प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण मूख्यरूप से चिकित्सा व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था प्रभावित हो रहे है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बोकारो, धनबाद, राँची एवं हजारीबाग जिले के हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के पूरूषों एवं महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना है। आंकड़ा एकत्रित करने के पश्चात् संख्यिाकीय विशलेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी में माध्यमान तथा मानक विचलन की गणना की गई है तथा समूहों के मध्य अन्तर टी–अनुपात ज्ञात किया गया है। प्राप्त परिणाम प्रदर्शित करते है कि हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक अन्तर अधिक पाया गया और हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर भी सार्थक अन्तर अधिक पाया गया है।

कूटशब्द : हृदय विकृति मानसिक स्वास्थ्य, चिकित्सा व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, समाजिक व्यवस्था।

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग में हृदय विकृति हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में आ खड़ी हुई है। जिससे केवल भारत हीं नहीं बल्कि पूरे विश्व इस विकृति से जुझ रहा है। हृदय शरीर का एक महत्पूर्ण अंग है जो छाती के मध्य में थोड़ी सी बाई ओर स्थित होती है और एक दिन में लगभग एक लाख बार एवं एक मिनट में 60–90 बार धड़कती है। हद्रय को पोषण एवं ऑक्सीजन, रक्त के द्वारा मिलती है। जो कोरोनरी धमनियों द्वारा प्रदान की जाती है। यह अंग दो भागों में विभाजित होती है दाहिना भाग शरीर से दुषित रक्त प्राप्त करती है एवं उसे फेफड़ों में पम्प करती है और रक्त फैफड़ों में शोधित हो कर हद्रय के बाएं भाग में वापस लौटा देती है जहां से वह शरीर में वापस कर दी जाती है।

मुख्यतः हृदय रोग पश्चिमी देशों में 20वीं सदी का रोग माना जाता है। यूरोप में 1930 तथा अमेरिका में 1940 के दशकों में यह रोग फैला, परन्तु भारतीय चिकित्सा ग्रंथों में इसका उल्लेख महर्षी चरक एवं महर्षी सुश्रुत के समय से हीं मिलता है। हृदय के बारे में चरक संहिता में उल्लेख है, की शरीर, ज्ञान, इंद्रियां, आत्मा, मन और चिंतन–हृदय पर ही निर्भर हैं। यही नहीं महर्षि चरक ने हृदय रोग के कारणों का भी उल्लेख किया है, की आवश्यकता से ज्यादा वसायुक्त एवं गरिष्ठि भोजन करना, अत्यधिक चिंताग्रस्त रहना, एक हीं स्थान पर बैठे–बैठे समय व्यतीत करना और निद्राप्रिय होना, कफ को बढ़ाते है और हृदय रोग को पैदा करते है।

हृदय विकृति मुख्य चार प्रकार के होते हैः–

कोरोनरी धमनी रोग

ये रोग हृदय धमनी में वसा जमा हो जोने के कारण होता है जिसके कारण दिल की धमनियां संकरी हो जाती है, दिल में खुन का प्रवाह कम हो जाता है। जिसके कारण व्यक्तियें के छाती के दर्द, चायपाये या मिचली आना, पसीना आना, सर घुमना जैसे लक्षण विकसित हो जाती है।

दिल का दौरा पड़ना

जब रक्त का कोई थक्का हृदय की ओर रक्त के बहाव को रोक देता है, तो रक्त के बिना ऊतक को ऑक्सीजन नहीं मिल पाती और वह मर जाता है जिसके कारण व्यक्ति में अत्यधिक पसीना

आना, बैचैनी, चक्कर आना, सांस लेने में परेशानी, मिचली आना, दिल के बीच में तनाव होना, जैसे लक्षण विकसित हो जाते है।

दिल का खराब होना

जब हृदय जरूरी अंगों को सही से रक्त नहीं पहुचा पाता है तो वो अंग काम करना बंद कर देते है। यह हृदय को बाये एवं दाएं दोनों अंगों को प्रभावित कर देता है जिसके कारण व्यक्तियों में अत्यधिक थकान, अचानक वजन बढ़ना, भुख न लगना, लगातार खांसी आना, अनियमित पल्स, पेट मे सूजन होना, सांस लेने में परेशानी होना, पैरो एवं टखनों में सूजन होना, जैसे लक्षण विकसित हो जाते है।

दिल की धड़कनों का अनियमित रूप से चलना

कई बार व्यक्तियों की दिल की धड़कने धीमे या फिर तेज गति से चलने लगती है जिसके कारण व्यक्तियों में धड़कन रूक–रूक कर चलने, फड़फड़ाने या ऊपर–निचे होने की अनुभूति, हृदय के तेज गति से धड़कने की अनूभूति, चक्कर आना, बेहोसी, कम सांस आना, सीने में बैचैनी, कमजोरी या थकान, जैसे लक्षण व्यक्तियों में विकसित हो जाते हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने हृदय विकृति उत्पन्न होने के अनके कारण बतलाए है। (किश्कर 1964) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है, कि ''हृदय विकृति उन व्यक्तियों में अधिक होता है जिसमें प्रतियोगिता की भावना तो काफी होती है, परन्तु प्रतियोगिता में असफल होने का डर भी उतना हीं अधिक होता है। (इन्नस 1969) के सिद्वान्त के अनुसार कुछ व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में क्रोध एवं रोष का तुफान छिपा रखते है भले हीं वह ऊपर से शान्त दिखाई देते है ऐसे व्यक्तियों में हृदय उच्च रक्तचाप का रोग उत्पन्न होने की संभावना तीव्र होती है। ऐसे व्यक्तियों का माँ के साथ धनिष्ठ संबंध होता है, इनमें दूसरे पर निर्भर रहने की आदत होती है, आत्म विश्वास कि कमी एवं आदर्श पूर्ण व्यवहार दिखलाने की आदत होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सांवेगिक तनाव इस रोग का सबसे प्रमुख कारण है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के आधुनिक समय में अस्वास्थ्य व्यक्ति को प्रायः उपेक्षा के दृष्टि से देखा जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थः मानसिक रोगों की अनुपस्थिति ही नहीं है। इसके विपरीत यह व्यक्ति के दैनिक जीवन का सक्रिय और निश्चित गुण है। यह गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता है जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ–साथ कार्य करते है। उसके भावनाएं, विचार और क्रियाएं एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती है। मानसिक स्वास्थ्य कार्य की ऐसी आदतों तथा व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रति ऐसे दृष्टिकोण को व्यक्त करता है जिनसे व्यक्ति को अधिकतम संतोष और आनन्द प्राप्त होता है। किन्तु, व्यक्ति को यह संतोष तथा आनन्द उस समूह या समाज से, जिनका वह सदस्य होता है, तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त करना पड़ता है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य समायोजन की वह प्रक्रिया है, जिसमें समझौता और सामजस्य, विज्ञान और निरन्तरता का समावेश रहता है। लेकिन आज के वर्त्तमान समय में मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। मानसिक स्वास्थ्य के बिना व्यक्ति कोई भी कार्य न तो सही तरीके से कर सकता है और न ही अपने जीवन के लक्ष्यों को सफलता पूवर्क प्राप्त कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य वैसे स्वास्थ्य से होता है जिसका संबंध मन से होता है, अर्थातः मानसिक स्वास्थ्य भी मानसिक शक्तियों के उचित विकास तथा मन को स्वास्थ्य एवं सुखी बनाने के लिए आवश्य सभी तरह की देख–भाल उपायों एवं उसी रूप से व्यवहार की बात कहना है। (जे0ए0हैडफील्ड 1952) ने कहा है कि '' मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य है, व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अपने पूर्ण रूप से अच्छी तरह तालमेल बिठाते हुए कार्य करते रहना''। (गुड कार्टर बी0 1969) ने कहा है कि '' मानसिक स्वास्थ्य पूर्णता या समग्रता का वह प्रतिक होता है, जो मानसिक कलेशों को दूर रखकर, व्यक्ति को सुखी तथा आन्नदपूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करता है। (पी0बी0ल्युकन 1949) के अनुसार '' मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति वह है, जो स्वयं खुश रहे, अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति से रहता हो, अपने बालकों को स्वस्थ्य नागरिक के रूप में चला सकें और इस प्रकार से अपने मूल कर्त्तव्यों को निर्वाह करने के पश्चात् भी उसमें उतनी शक्ति बना रहे कि वह समाज के लिए कुछ योगदान दे सकें।

वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की एक लगातार अच्छी, आरामदायक व खुशनुमा अवस्था है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का ज्ञान होता है तथा वह जीवन में आने वाले सामान्य तनाव को कम करने, समाप्त करने में सक्षम होता है साथ ही वह उत्पादक कार्यों को करते हुए अपना समाज में सकारात्मक योगदान देता है।

समस्या कथन

हृदय विकृति पर मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव का अध्ययन।

शोध के उद्देष्य

1) हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2) हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पना

1) हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
2) हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

तकनीकी शब्दों का परिभाषिकरण

हृदय विकृति

हृदय विकृति हमारे हृदय में होने वाले समस्यों का प्रतिनिधित्व करता है। जो हमारे शरीर का सबसे अधिक संवेदनशील अंग है। उत्तेजना की तीव्र सवेग्रात्मक अवस्था उत्पन्न होते ही हृदय की धड़कन अनियमित हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप रक्त–चाप में वृद्धि, नाड़ी की तेज गति एवं मांशपेशियों में रक्त की आपूर्ति बढ़ जाती है एवं अन्तरावयवों में रक्त की आपूर्ति कम हो जाती है। एवंम विषाद की तीव्र संवेग्रात्मक अवस्था उत्पन्न होने से हृदय गति मंद पड़ जाती है, तथा रक्त–चाप भी घट जाती है। आज के वर्तमान समय में हृदय विकृति को लेकर कुछ अन्धविश्वास भी फैल चुके है। जैसे–महिलाओं से ज्यादा हृदय विकृति पुरूषों को अधिक होते है। एवम् पुरूषों को 40 वर्ष के बाद और महिलाओं में 45 वर्ष की उम्र में हृदय विकृति होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने (2002) में अनुमानित किया, कि पूरे विश्व में होने वाली मृत्यु में से 12.6 प्रतिशत् हृदय विकृति से होती है।

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक स्वास्थ्य मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य यह समझा जाता है कि जब व्यक्ति किसी भी तरह की मानसिक बिमारी से मुक्त होता है तो उसे मानसिक रूप से स्वस्थ्य समझा जाता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वह होता है जो स्वयं सुखी हो, और अपने पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्वक रहते हो, और अपने बच्चों को स्वस्थ नागरिक बनाते है। मानसिक स्वस्थ्य रहने पर व्यक्ति अपने

परिवेश से भली प्रकार संमजन कर पाता है और अपनी एवं अपने परिवार की तथा अपने समाज की उन्नती के लिए कोशिश करता है। आधुनिक नैदानिक मनौवैज्ञानिकों ने मानसिक स्वास्थ्य को समायोजनशीलता की क्षमता को मुख्य कसौटी माना है। इसी संदर्भ में (कार्ल मेनिंगर 1945) ने कहा है। ''मानसिक स्वास्थ्य अधिकतम खुशी तथा प्रभावशीलता के साथ वातावरण एवं उसके प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ मानव समायोजन है, वह एक संतुलित मनोदशा, सर्तक बुद्धि, समाजिक रूप से मान्य व्यवहार तथा एक खुश मिजाज बनाए रखने की क्षमता है''।

शोध के परिसीमाएँ
प्रस्तुत शोध में समय, श्रम एवं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान की निम्नलिखित परिसीमाएँ है।

1) इस शोध अध्ययन में हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के 200 पुरूषों एवं महिलाओं पर सीमित रखा गया है।
2) इस शोध अध्ययन में हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के पुरूषों एवं महिलाओं का उम्र 18 से 60 वर्ष तक सीमित रखा गया है।
3) इस शोध अध्ययन में बोकारो, धनबाद, राँची एवं हजारीबाग जिले के हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के पुरूषों एवं महिलाओं को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है।
4) इस शोध अध्ययन में हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के पुरूषों एवं महिलाओं को लिया गया है।

शोध के प्रविधि
प्रस्तुत शोधकार्य के उद्देश्यों की प्राप्ती तथा परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आंकड़े एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श
प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा संभाव्यता प्रतिदर्श विधि में से याद्धच्छिक प्रतिदर्श का प्रयोग कर बोकारो, धनबाद, राँची एवं हजारीबाग जिले के हृदय विकृति एवं गैर हृदय विकृति के 200 पुरूषों एवं महिलाओं का चयन किया गया है।

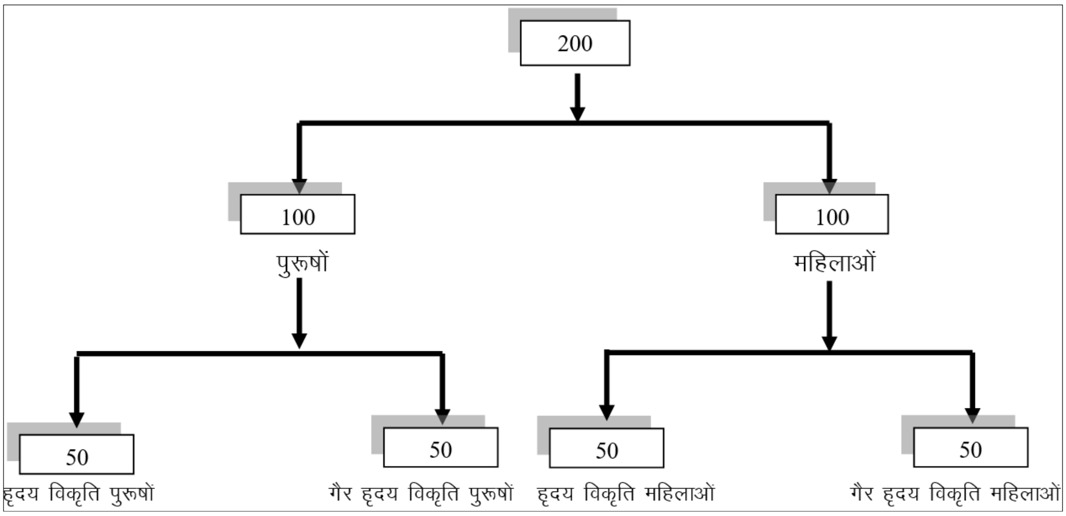

शोध उपकरण
इस शोध में अध्ययनकर्त्ता प्रस्तुत अध्ययन के सम्पादन करने हेतु (MHB-SS मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण डॉ0 अरूण कुमार सिंह एवं डॉ0 अल्पना सेन गुप्ता) द्वारा निर्मित का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रस्तुत सांख्यिकी
शोध द्वारा परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण किया गया इस हेतु सांख्यिकीः–

(1) मध्यमान.
(2) मानक विचलन.
(3) टी–अनुपात.

आँकड़ों का वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या
परिकल्पना 1.

1) हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी संख्या 1: हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सांख्यिकीय विवरण।

क्र0 सं0	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की कुल संख्या 100	मध्यमान	मानक विलचन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
1	हृदय विकृति पुरूषों	50	12.94	2.33	7.08	0.01
2	गैर हृदय विकृति पुरूषों	50	10.26	2.54		

स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान।
0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97,
0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60,

उपरोक्त तालिका के विशलेषण से ज्ञात होता है कि हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त माध्यमान 12.94 व 10.26 के बिच 'टी' मूल्य 7.08 प्राप्त हुआ यह 'टी' मूल्य 0.05/0.01 स्तर पर 1.97/2.60 में अधिक है जो यह प्रदर्शित करता है कि हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

अतः परिकल्पना ''हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा''। अस्वीकृत की जाती है।
हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़ों को प्रदर्शित करने वाला आरेखः

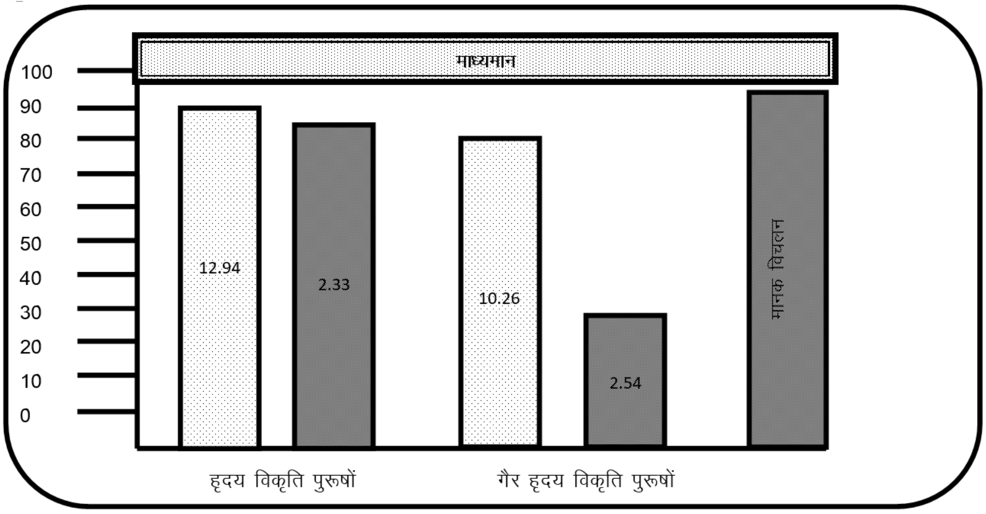

आरेख संख्या 1.1

परिकल्पना 2.

हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी संख्या 2: हदृय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सांख्यिकीय विवरण।

क्र0 सं0	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की कुल संख्या 100	मध्यमान	मानक विलचन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
1	हृदय विकृति महिलाओं	50	13.44	2.69	4.14	0.01
2	गैर हृदय विकृति महिलाओं	50	11.50	2.57		

स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान।
0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97,
0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60,

उपरोक्त तालिका के विशलेषण से ज्ञात होता है कि हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त माध्यमान 13.44 व 11.50 के बिच 'टी' मूल्य 4.14 प्राप्त हुआ यह 'टी' मूल्य 0.05/0.01 स्तर पर 1.97/2.60 में अधिक है जो यह प्रदर्शित करता है कि हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

अतः परिकल्पाना ''हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा''। अस्वीकृत की जाती है।

हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़ों को प्रदर्शित करने वाला आरेखः

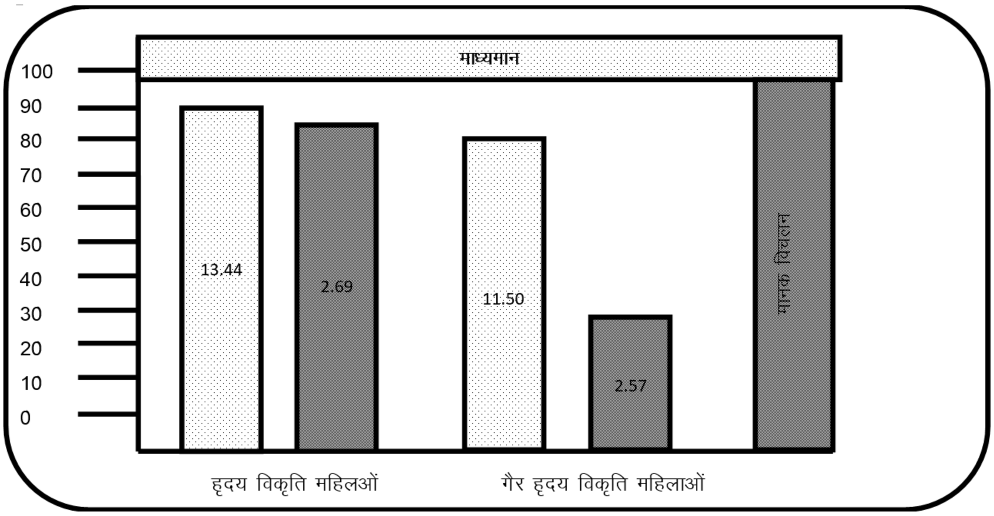

आरेख संख्या 2.1

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

1. हृदय विकृति पुरूषों एवं गैर हृदय विकृति पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक अन्तर अधिक पाया गया है।
2. हृदय विकृति महिलाओं एवं गैर हृदय विकृति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक अन्तर अधिक पाया गया है।

सर्दभ सूची

1. सिंह, अरूण कुमार। आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशनः मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना. प्रष्ठ संख्या 2002, 344–346.
2. शर्मा, जगदीश प्रसाद। मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोरोग नर्सिंग, प्रकाशनःचिन्मय जैन पब्लिकेशन्स 780 बाणवालों का दरवाजा, चौड़ा रास्ता, जयपुर- 2017, पृष्ठ संख्या 1-6.
3. गौड़, विजय कुमार। सार्वजनिक कार्य स्थलों पर कार्यरत कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, प्रकाशनः बिहेवियर रिर्सच रिम्यु, (2012), अंक 04नं0 -02 पृष्ठ संख्या 254–258.
4. सिंह, बृन्दा। मानव शरीर रचना और क्रिया विज्ञान, प्रकाशनःसी0बी0एस0 पब्लिसर एवं डीस्ट्रीबुटर 24 अन्सारी रोड़ दरीयागज, न्यु दिल्ली- (2018), पृष्ठ संख्या 76-95.
5. शर्मा, डॉ0 रामनाथ। मनोविज्ञान और मनोस्वास्थ्य, प्रकाशनः एन0आर0 ब्रदर्स प्रकाशन नर्सिंग 46 जावरा कंमपांउड़ एम0वाय0 अस्पताल मार्ग इन्दैर- (2014), पृष्ठ संख्या 223-253.
6. सुलेमान, डॉ मुहम्मद मनोविज्ञान। शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी, प्रकाशनः मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली- (2005), पृष्ठ संख्या 117-120.
7. https://www.onlymyehalth.com
8. https://hi.m.wikipedia.org.